बच्चे की वाणी के विकास के संदर्भ में इस लेख में बताया गया है कि आरंभ में बच्चे की मौखिक प्रतिक्रियाएं - जो कि स्वभाविक होती हैं - अनेक बाहरी प्रभावों से जुड़ी रहती हैं। खास स्थितियों के दोहराव से मौखिक प्रतिक्रियाएं अनुकूलित प्रतिक्रियाओं में तब्दील होने लगती हैं जिसमें कि सामाजिक संपर्क का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

वायगोत्स्की इस लेख में एक महत्त्वपूर्ण स्थापना यह भी देते हैं कि बच्चे की वाणी जो कि आरंभ में मौखिक प्रतिक्रियाओं के रूप में अभिव्यक्त होती है, विचार से पूर्णत: स्वतंत्र रहते हुए विकसित होती है। अर्थात् आरंभिक अवस्था में वाणी का विकास एवं विचार पूर्णत: स्वतंत्र रहते हुए विकसित होते हैं और कालान्तर में दोनों एकाकार होने लगते हैं।

लेख में आए पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद एवं अर्थ अन्त में दिया गया है।

वाणी का विकास

❑ वायगोत्स्की

वाणी के विकास की प्रक्रिया व्यवहार के बनने की प्रक्रिया को समझने के लिए सरलतम माध्यम है। व्यवहार के बनने की प्रक्रिया को अनुकूलन प्रक्रिया (कंडीशंड रिफ्लेक्स) की दृष्टि से भी समझा जाता है और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की दृष्टि से भी। वाणी का विकास इन दो दृष्टिकोणों के तुलनात्मक अध्ययन का भी सुभीते का माध्यम है। सर्वप्रथम, वाणी का विकास बच्चे के सांस्कृतिक व्यवहार के एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य (फंक्शन) के निर्माण का इतिहास प्रस्तुत करता है, जो कि उसके सांस्कृतिक अनुभव अर्जित करने के मूल में निहित है। खासतौर से क्योंकि यह विषय इतने केंद्रीय, अनिवार्य, महत्त्व का है, हम इसका इस्तेमाल बाल व्यवहार के विकास के सशक्त पहलू पर विचार शुरू करने में करेंगे।

वाणी के विकास के आरंभिक चरण ठीक उसी तरह संपन्न होते हैं, जैसे कि अनुकूलित प्रतिक्रिया के सिद्धांत, व्यवहार के किसी नए रूप के विकास की ओर संकेत करते हैं।

एक तरफ, बच्चे की वाणी की शुरूआत जन्मजात प्रतिक्रिया (इनेट रिएक्शन), आनुवांशिक प्रतिक्रिया (हेरिडिटरी रिफ्लेक्स) से होती है, जिन्हें हम स्वाभाविक व्यवहार का नाम देते हैं। यही पूर्णत: सभी परवर्ती अनुकूलित प्रतिक्रिया के विकास का आधार हैं। रोने की प्रतिक्रिया (रिफ्लेक्स), बच्चे की एक मौखिक प्रतिक्रिया, इसी किस्म की एक स्वभाविक प्रतिक्रिया (अनकंडीशंड रिफ्लेक्स) है, इसी किस्म का आनुवांशिक आधार है, जिससे एक वयस्क मनुष्य की वाणी विकसित होती है। हम जानते हैं कि इन व्यवहारों को एक नवजात शिशु में भी देखा जा सकता है।

स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं के बारे में हमारे वर्तमान ज्ञान की स्थिति को देखते हुए यह कह पाना मुश्किल है कि रोने के अलावा इस तरह की और कितनी जन्मजात प्रतिक्रियाएं हैं, लेकिन ताजा शोध बताते हैं निस्संदेह नवजात शिशु की मौखिक प्रतिक्रियाओं में सिर्फ एक ही प्रतिक्रिया शामिल नहीं है, बल्कि ऐसी परस्पर संबद्ध स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं की एक पूरी श्रृंखला मौजूद है। हालांकि जन्म के बाद पहले ही सप्ताह में ऐसा बदलाव आ जाता है जो किसी भी अनुकूलित प्रतिक्रिया के समान होता है। खास स्थितियों के दोहराव, उन्हीं स्थितियों में अनुकूलित उद्दीपनों (कंडीशंड स्टीम्यूली) के साथ मिलकर इन स्थितियों के संयोजन में प्रवेश के द्वारा बच्चे की मौखिक अनुकूलित प्रतिक्रियाओं में बहुत जल्दी, यहां तक कि जीवन के प्रथम सप्ताह में, परिवर्तित होना शुरू हो जाती हैं। वे न सिर्फ विभिन्न स्वाभाविक आंतरिक उद्दीपनों बल्कि बच्चे के अनुकूलित उद्दीपनों, जो कि बच्चे की विभिन्न जन्मजात प्रतिक्रियाओं से भी संबद्ध हैं, के द्वारा सामने आते हैं।

सी. बॉहेलर (C. Buhler) ने पहले वाणी के विकास को पुस्तिकाओं के रूप में कदम दर कदम दर्ज करने का लक्ष्य रखा, उन्होंने 40 बच्चों के वाणी के विकास का व्यवस्थित रूप से अवलोकन किया, और वाणी के विकास के सभी स्तरों को सिल-सिलेवार प्रस्तुत किया। शोधकर्ता ने खासतौर से यह दिखाया कि मौखिक प्रतिक्रिया की उपस्थिति से जुड़ कर वाणी की मदद से जो सामाजिक संबंध स्थापित होते हैं उन्हें बच्चे अपने व्यवहार में प्रदर्शित करते हैं।

यदि हम इस बारे में विस्तार से बताना चाहें कि बच्चे की मौखिक प्रतिक्रिया कैसे विकसित होती है तो हम यह देखेंगे कि बच्चा उसी प्रक्रिया को दोहराने के लिए तत्पर है जो अनुकूलित प्रतिक्रिया के निर्माण के लिए प्रयोगशाला अध्ययन के दौरान प्रायोगिक तौर पर स्थापित की गई थी। शुरुआत में अनुकूलित प्रतिक्रिया एक

ऐसी सामान्यीकृत अवस्था में होती है, जो न सिर्फ किसी खास संकेत, बल्कि अनेक ऐसे संकेतों का भी जवाब प्रतीत होती है जो अपेक्षाकृत जटिल हैं या जिनकी दिए गए संकेतों के साथ किसी तरह की समानता है। धीरे-धीरे इन प्रतिक्रियाओं में अंतर आने लगता है। ऐसा तब होता है जब यदि किसी खास परिस्थिति में किसी एक संकेत का दोहराव अन्यों की बजाए ज्यादा जल्दी-जल्दी हो रहा हो। समय बीतने के साथ यह प्रतिक्रियाएं चुनिंदा उद्दीपनों के बदले में ही प्रकट होने लगती हैं।

इसी तरह की सामान्यीकृत प्रतिक्रिया का एक उदाहरण एक बच्चे द्वारा अपनी मां या आया को देखकर उसके द्वारा प्रकट की जाने वाली मौखिक प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। शुरूआत में यह मौखिक प्रतिक्रिया किसी भी व्यक्ति को आस-पास देखने पर प्रकट होती है, लेकिन धीरे-धीरे इसमें अंतर स्पष्ट होने लगता है और इस तरह की प्रतिक्रिया सिर्फ मां को देखकर या उसके द्वारा स्तनपान कराने के दौरान पहने जाने वाले वस्त्रों को पहचानने पर प्रकट होने लगती है। उदाहरण के लिए सी. बॉहेलर ने बच्चे को दूध पिलाने के समय मां के द्वारा पहना जाने वाला गाउन किसी अन्य व्यक्ति के पहनने पर बच्चे द्वारा प्रकट की जाने वाली मौखिक प्रतिक्रिया का भी अवलोकन किया।

नवजात शिशु द्वारा प्रकट की जाने वाली मौखिक प्रतिक्रियाओं के बारे में एक अन्य बहुत महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि - यह प्रतिक्रियाएं कभी अपने आप में अकेली विकसित नहीं होती हैं, बल्कि कई प्रतिक्रियाओं के समूह में ही यह प्रतिक्रियाएं विकसित होती हैं। बच्चे में कभी सिर्फ एक मौखिक प्रतिक्रिया का विकास नहीं होता बल्कि उसमें कई गतिविधियों की श्रृंखला विकसित हो रही होती है, और मौखिक प्रतिक्रिया उनका एक हिस्सा भर होती है। यहां भी विकास उसी रास्ते से होता है जिसे अनुकूलित प्रतिक्रिया के अध्ययन के रूप में समझा गया है।

क्योंकि मौखिक प्रतिक्रिया अनेक बाहरी प्रभावों से जुड़ी हुई है, यह एक असंगठित समग्र का हिस्सा भर है, इसलिए एक स्वतंत्र मौखिक प्रतिक्रिया धीरे-धीरे विकसित होती है। बच्चे की जिंदगी के शुरूआती वर्षों में इसका विकास इस तरह होता है : एक अलग मौखिक प्रतिक्रिया, उन बहुसंख्य असंगठित क्रियाकलापों से अलग-थलग रहती है, जिनका कि यह मौखिक प्रतिक्रिया एक हिस्सा होती है। खासतौर से, यह प्रतिक्रिया केन्द्रीय महत्त्व हासिल करना शुरू कर देती है। कुछ गतिविधियां छूट जाती हैं और जो बचा रह जाता है वह होता है चेहरे, कंधों और हाथों का खास तरह का संचालन जो सिर्फ मौखिक प्रतिक्रिया से सीधे संबद्ध होते हैं। अंतत: मौखिक प्रतिक्रिया अन्य तमाम प्रतिक्रियाओं की पृष्ठभूमि में प्रकट होने लगती है और खासतौर से अन्य अनेक प्रतिक्रियाओं से अलग हो जाती है।

बच्चे के जीवन के पहले छह महीनों में मौखिक प्रतिक्रियाओं की भूमिका की विशिष्टता को जानना भी महत्त्वपूर्ण होगा। शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान, हालांकि, दोनों इस बात पर सहमत हैं कि हम मौखिक प्रतिक्रियाओं का श्रेय दो मूलभूत कार्यों (फंक्शंस) को दे सकते हैं जिनका फिर भी स्पष्ट शरीर विज्ञान संबंधी आधार है। पहला कार्य जिसे पुराने मनोवैज्ञानिक अभिव्यंजक गतिविधि (एक्सप्रेसिव मूवमेंट) कहते हैं, से बना है। यह एक स्वाभाविक, नैसर्गिक प्रतिक्रिया है, जो शरीर की भावनात्मक अवस्था की बाह्य अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट होता है। इसलिए बच्चा जब तकलीफ में होता है तो अलग तरह से रोता है, जबकि नाराज होने पर अलग तरह से रोता है। यदि हमें मनोविज्ञान की भाषा में इस सवाल का जवाब देना हो, जैसे कि अभिव्यंजक गतिविधि किन बातों का प्रतिनिधित्व करती है, तो हमें कहना होगा कि मौखिक प्रतिक्रिया सामान्य भावनात्मक प्रतिक्रिया का लक्षण है, जो बच्चे के उसके वातावरण के साथ संतुलन या उसमें व्यवधान को अभिव्यक्त करती है। सामान्य अवलोकन से ही यह कौन नहीं जानता कि भूखा बच्चा वैसे ही नहीं रोता जैसे कि भरे पेट कोई बच्चा रोता है ? कोई भी बदलाव पूरे शरीर की अवस्था को प्रभावित करता है और इससे भावनात्मक प्रतिक्रिया में परिवर्तन आता है, मौखिक प्रतिक्रिया भी ऐसे में बदलती है।

इससे पता चलता है कि मौखिक प्रतिक्रिया का पहला कार्य (फंक्शन) भावनात्मक होता है।

दूसरा कार्य (फंक्शन), जो सिर्फ तभी प्रकट होता है जब मौखिक प्रतिक्रिया अनुकूलित प्रतिक्रिया बन चुकी होती है, वह कार्य है सामाजिक संपर्क। एक महीने की उम्र में, बच्चे के आस-पास के लोगों द्वारा उत्पन्न की जाने वाली मौखिक प्रतिक्रियाओं के जवाब में एक खास, एक प्रशिक्षित मौखिक अनुकूलित प्रतिक्रिया प्रकट होने लगती है। यह प्रशिक्षित मौखिक अनुकूलित प्रतिक्रिया भावनात्मक प्रतिक्रिया के साथ मिलकर या उसके स्थान पर, बच्चे की शारीरिक स्थिति को अभिव्यक्त करने के लिहाज से उसी भूमिका को निभाने लगती है जिसका निर्वाह उसके आस-पास के लोगों के साथ उसके सामाजिक संबंध के लिहाज से किया जाता है। बच्चे की आवाज उसकी वाणी या वाणी की आरंभिक अवस्था में उसका स्थान ले सकने वाला उपकरण बन जाती है।

इस तरह हम देखते हैं कि प्रागैतिहास, जो कि जीवन का पहला साल है, में बच्चे की वाणी पूर्णत: स्वाभाविक प्रतिक्रिया, सर्वाधिक नैसर्गिक और भावनात्मक, की व्यवस्था पर आधारित

है, जिससे एक कम या ज्यादा स्वतंत्र अनुकूलित मौखिक प्रतिक्रिया विकसित होती है। इसके कारण, स्वयं प्रतिक्रिया के कार्य में परिवर्तन आता है : यदि पूर्व में, कार्य बच्चे द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली सामान्य शारीरिक या भावनात्मक प्रतिक्रिया का हिस्सा मात्र थी, तो अब यह सामाजिक संपर्क के कार्य को भी पूरा करना शुरू कर देती है।

हालांकि बच्चे द्वारा व्यक्त की जाने वाली मौखिक प्रतिक्रिया शब्द के लिहाज से अब तक भी पूर्णत: वाणी कहलाने की स्थिति में नहीं आती है। यहां हम बात करते हैं स्पष्ट वाणी के उच्चारण की, बच्चे की वाणी के विकास की सही समझ के लिए सबसे मुश्किल उदाहरण की, जो है उसका सांस्कृतिक विकास। याद रखें कि हमने आंरभ मे एक ही प्रक्रिया के बीच शारीरिक और मनोवैज्ञानिक नजरिए के बीच फर्क की बात की थी।

वाणी के विकास में इस उदाहरण की बात करते हुए हमें एक और प्रावधान को भी शामिल करना चाहिए, हमने देखा कि बच्चे की मौखिक प्रतिक्रिया बहुत कम उम्र में चिंतन से पूर्णत: स्वतंत्र रहते हुए विकसित होने लगती है। कम से कम 18 महीने के बच्चे से हम यह उम्मीद तो नहीं कर सकते कि उसके विचार और चेतना पूर्णत: विकसित होंगे। यदि बच्चा रोता है तो कम से कम हम यह अनुमान तो नहीं कर सकते हैं कि वह अपने अनुभव से यह जानता होगा कि रोने और उसके बाद उसके आस-पास के लोगों द्वारा की जाने वाली कार्यवाही के बीच क्या संबंध है और इस रोने की किसी अन्य को प्रभावित करने के इरादे से हमारे द्वारा किए गए उद्देश्यपूर्ण संवाद या कृत्य के साथ तुलना की जा सकती है।

इसलिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि बच्चे की वाणी के विकास का प्रथम चरण बच्चे की सोच के विकास से संबंधित नहीं है और यह बच्चे की बौद्धिक प्रक्रिया के विकास से भी संबंधित नहीं है। दरअसल, मूर्ख और विमंदित बच्चों के अवलोकन में भी हम यह पाएंगे कि विमंदित बच्चे भी विकास के इस दौर को तो पूरा करते हैं। इडिंजर (Edinger) ने तो बिना मस्तिष्क के पैदा हुए बच्चों में भी इन प्रतिक्रियाओं को दर्ज करने में सफलता हासिल की।

जैसा कि शोध बताते हैं कि ऐसा सिर्फ वाणी के साथ ही नहीं होता है कि वह अपनी आरंभिक अवस्था में विचार के बिना ही विकसित हो रही होती है, बल्कि ठीक इसी तरह विचार भी वाणी के बिना विकसित होते हैं। कॉहेलर (Kohler) और अन्य मनोवैज्ञानिकों ने एक बंदर और कुछ बच्चों पर एक प्रयोग किया। जब शोधकर्ताओं ने बच्चों को उस स्थिति में रखा जिसमें कुछ वस्तुओं को हासिल करने के लिए बंदर ने कुछ सामान्य उपकरणों या तरीकों का इस्तेमाल किया था, तब उस स्थित में 9-11 महीने के बच्चों ने भी उसी तरह की प्रतिक्रिया व्यक्त की जैसी बंदर ने की थी। बंदर की ही तरह बच्चों ने भी एक वस्तु को अपनी जगह से हिलाने के लिए लकड़ी, तार या ऐसे ही विविध उपकरणों की मदद ली, और वस्तु तक पहुंचने के लिए अपनी बाहों का परोक्ष रूप से इस्तेमाल किया। दूसरे शब्दों में कहें तो इस उम्र के बच्चे की वाणी की क्षमता कैसी भी हो, वे कुछ सामान्य प्रतिक्रियाएं ही व्यक्त करते हैं।

के. बॉहेलर (K. Buhler) 9 से 12 महीने की उम्र को चिंपाजी जैसी उम्र कहते हैं। इसके पीछे उनका मंतव्य यह बताना है कि इस उम्र के बच्चे उन उपकरणों का इस्तेमाल करते हैं, सामान्यत: जिनका उपयोग चिंपाजियों द्वारा किया जाता है।

इस तरह हम दो निष्कर्षों पर पहुचंते हैं । एक तरफ वाणी का विकास चिंतन से पूर्णत: स्वतंत्र होता है और पहले चरण में यह कमोवेश सामान्य दिमाग वाले और विमंदित बच्चों में लगभग एक जैसा ही होता है। पहले दौर में वाणी के विकास का चरित्र अनुकूलित प्रतिक्रिया के निर्माण से संबंधित सभी चरणों सहित, हमारी पूर्वनिर्धारित छवि की पूर्णत: पुष्टि करती है। यह इस बात का संकेत है कि वाणी के विकास के सभी आरंभिक रूप चिंतन से पूर्णत: स्वतंत्र रहते हुए विकसित होते हैं। दूसरी तरफ 9-12 महीने की उम्र में बच्चा कुछ सामान्य उपकरणों का प्रयोग करने लगता है, वह यह क्षमता उस उम्र में हासिल कर लेता है जबकि वाणी का विकास नहीं हुआ है। इससे यह समझ में आता है कि चिंतन अपनी प्रक्रिया में विकसित होता है और वाणी के विकास का रास्ता अपना अलग है। आरंभिक उम्र में वाणी के विकास को समझने के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है।

एक खास बिंदु पर आकर यह दोनों रेखाएं - वाणी का विकास और चिंतन का विकास, जो अलग-अलग रास्तों पर चल रही हैं - एक-दूसरी को काटती हुई या एक दूसरी से मिलती हुई नजर आती हैं, यहां विकास की दो रेखाएं एक-दूसरी को पार करती हैं। वाणी बौद्धिक हो जाती है, चिंतन से युक्त और चिंतन शाब्दिक हो जाता है वाणी से सुसज्जित। इस केंद्रीय दृष्टांत का स्पष्टीकरण जिस बच्चे के सांस्कृतिक व्यवहार का भविष्य निर्भर करता है, ही वाणी और चिंतन के विकास की चर्चा का आधार है।

लेकिन, पहले हम इस विषय से सरसरी तौर पर किए गए कुछ अवलोकनों को यहां प्रस्तुत करेंगे। चिंतन और वाणी के विकास के अवयवों को समझाने वाला पहला सिद्धांत डब्ल्यू. स्टर्न (W. Stern) ने प्रस्तुत किया, जिन्होंने बच्चों की वाणी के विकास से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण पुस्तिका तैयार की। स्टर्न कहते हैं कि

एक खास उम्र में (संभावित: डेढ से दो वर्ष के दौरान) चिंतन और वाणी का मिलन होता है। दूसरे शब्दों में, एक अंतराल के बाद दोनों का विकास एक खास, एक बिल्कुल नई दिशा पकड़ लेता है। स्टर्न इस क्षण को बच्चे की पूरी जिंदगी में उसके द्वारा की जाने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण खोज का क्षण बताते हैं। स्टर्न के शब्दों में, बच्चा यह खोज लेता है कि हर चीज का अपना एक नाम होता है और प्रत्येक वस्तु से जुड़ा एक ऐसा शब्द है जो उसकी पहचान बताता है।

स्टर्न ने यह कैसे पता लगाया कि डेढ़ से दो वर्ष की उम्र में बच्चा ऐसी खोज कर लेता है ? स्टर्न यह स्थापना तीन आधारभूत वस्तुपरक लक्षणों के आधार पर देते हैं।

पहला लक्षण। बच्चा जिसमें चिंतन और वाणी की रेखाओं के बीच कांट-छांट के बाद का अंतराल आ चुका है वह अचानक अपने शब्द भंडार का विस्तार करने लगता है। यदि पहले चरण में उसका शब्द भंडार एक या दो दर्जन शब्दों तक सीमित था, तो इस दौर में इसका विस्तार होने लगता है और कई बार तो मात्र दो या तीन महीनों के अंतराल में ही यह आठ गुणा तक भी बढ़ जाता है। पहला लक्षण शब्द भंडार के विस्तार का प्रस्फुटन ही है।

दूसरा लक्षण। बच्चा पहली बार कथित प्रश्नाकुलता का प्रदर्शन करता है : बच्चा किसी वस्तु को देखता है और एक दूसरे रूप में सवाल करता है कि इस वस्तु का नाम क्या है ? या इसको क्या कहते हैं ? बच्चा इस तरह व्यवहार करने लगता है मानो वह जानता है कि वयस्कों ने भले ही उसके सामने वस्तु का नाम न लिया हो, लेकिन उस वस्तु का कोई नाम जरूर है।

तीसरा लक्षण पहले दोनों से संबंधित है और वह आमूल बदलाव है, जो मनुष्य वाणी की चारित्रिक विशेषता है, जबकि यह विशेषता जानवरों में पूरी तरह अनुपस्थित होती है। इस परिवर्तन ने स्टर्न को यह मानने का आधार उपलब्ध कराया है कि यहीं से वाणी के विकास में अनुकूलित प्रतिक्रिया के स्वरूप से अन्य स्वरूपों की ओर निर्णायक संक्रमण शुरू होता है। यह भी अच्छी तरह ज्ञात है कि जानवर भी मनुष्य की वाणी को सीखने में सक्षम होते हैं, लेकिन उनके इसे सीख पाने की निश्चित सीमाएं हैं। जानवर उतने ही शब्द सीख पाते हैं, जितने उनके आस-पास रहने वाले मनुष्य उन्हें सिखाते हैं। किसी पशु ने कभी उसके आस-पास मौजूद मनुष्यों द्वारा सिखाए गए शब्दों के अलावा अन्य कोई शब्द नहीं बोला, न ही कभी किसी जानवर ने ऐसी किसी वस्तु को उसके नाम से पुकारा जिसका नाम उसके आस-पास उपस्थित लोगों ने उसे न सिखाया हो। इसलिए, जानवर और छोटे बच्चे शब्दों को सीखने के लिए जिस विधि का प्रयोग करते हैं वह शब्द भंडार के परोक्ष विस्तार को दर्शाती है। बच्चे द्वारा नए शब्द का प्रयोग अनुकूलित प्रतिक्रिया की तरह घटित होता है: जब बच्चा अपने आस-पास के लोगों द्वारा बोले जाने वाले किसी एक शब्द को सुनता है तो वह उसे अपने आस-पास मौजूद किसी न किसी वस्तु से संबद्ध करता है और उसके बाद ही वह उसका उच्चारण करता है। यदि कोई छोटा बच्चा कितने शब्दों को जानता है इसकी गिनती करना चाहें तो पाएंगे कि वह उन सभी शब्दों से परिचित है, जिनका प्रयोग उसके आस-पास उपस्थित लोगों द्वारा किया जाता है। डेढ से दो साल की उम्र के बीच ही वह अंतराल आता है जब बच्चा स्वत: यह पूछने लगता है कि अमुक वस्तु का क्या नाम है ? और वह उन शब्दों का प्रयोग करने लगता है जिन्हें वह अब तक नहीं जानता था। इस तरह वह अपने शब्द भंडार के विस्तार में सक्रिय भूमिका निभाने लगता है।

इस तरह हमारे पास तीन बिन्दु हैं : (1) शब्द भंडार का आकस्मिक विस्तार, (2) बच्चे के प्रश्न पूछने का समय (यह सवाल इस तरह का हो सकता है कि 'इसको क्या कहते हैं ?') और (3) बच्चे के शब्द भंडार के सक्रिय विस्तार की ओर संक्रमण। तीसरा बिंदु बच्चे के मनोवैज्ञानिक विकास के स्तरों के बीच सीमा का निर्धारण करता है; तीसरे बिंदु के अनुसार हम यह बता सकते हैं कि बच्चे के विकास की राह में अंतराल आया है या नहीं।

इन तीन बिंदुओं को हम किस तरह समझें ? यहां वाणी का क्या हुआ और तीसरे लक्षण में क्या दर्शाया गया है ?

डब्ल्यू. स्टर्न जो पहले इन बिंदुओं को स्थापित करते हैं, वे बाद में यह सिद्धांत विकसित करते हैं कि बच्चा ऐसा व्यवहार करता है मानो हर वस्तु का स्वयं कोई नाम हो। इस भाषा के बारे में बच्चा ऐसे व्यवहार करता है जैसे हम किसी विदेशी भाषा में व्यवहार कर रहे हों। कल्पना करें कि हम किसी अन्य देश में हैं जहां कि भाषा के गिने-चुने शब्द ही हम जानते हैं । ऐसे में किसी भी नई वस्तु को देखते ही हमारा पहला प्रश्न यही होगा कि इसे क्या कहते हैं ? या यह क्या है ? स्टर्न मानते हैं कि बच्चा दरअसल खोज या अविष्कार कर रहा होता है, विमंदित बच्चे यह खोज विलंब से करते हैं, जबकि बुद्धिहीन कभी यह खोज नहीं कर पाते।

स्टर्न इस खोज को बच्चे में चिंतन के रूप में देखते हैं और परिकल्पना देते हैं कि इस तरह की स्थिति सामान्य अनुकूलित प्रतिक्रिया से कुछ भिन्न है। जैसा कि वे कहते हैं कि इसके साथ जो घटित हो रहा है वह यह कि उसमें किसी प्रतीक और उसके अर्थ के बीच संबंध को लेकर चेतना विकसित हो रही होती है। उनकी राय में बच्चा प्रतीक का अर्थ खोज लेता है। उसका यह विश्लेषण वस्तुओं के बाहरी रूपों में समानता पर आधारित होता है। बच्चा ऐसा व्यवहार करता है मानो उसने किसी वस्तु का अर्थ

खोज लिया है, यह वास्तव में एक खोज है इस मान्यता का आधार भी यही होता है। लेकिन सही जाति आधारित (genotype) अध्ययनों के आधार पर हम जानते हैं कि किसी प्रक्रिया या विचार के बाहरी रूप में समानता नजर आने का मतलब यह नहीं है कि वह वास्तविक रूप में भी समान हो। व्हेल दिखने में मछली ही होती है, लेकिन शोध बताते हैं कि व्हेल एक स्तनधारी जीव है। बच्चे की कथित खोज दिखने में समानता पर आधारित होती है।

इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एक बच्चा महज डेढ़ से दो वर्ष की उम्र में जबकि उसका सोचना अभी बेहद आरंभिक अवस्था में है, ऐसी खोज करने में समर्थ होता है जिसके लिए सघन बौद्धिक प्रयास अपेक्षित है। यही वजह है कि इस स्थापना पर संदेह होता है कि एक छोटा बच्चा इतना जटिल मनोवैज्ञानिक अनुभव रखता होगा, जो उसे प्रतीक और उसके अर्थ के बीच के संबंध को समझने की सामर्थ्य दे सके। जैसा कि प्रयोग बताते हैं ज्यादातर इससे कहीं ज्यादा उम्र के बच्चे और बड़े भी अपने पूरे जीवनकाल में इस तरह की खोज नहीं कर पाते हैं, और न ही वे शब्दों के अनुकूलित अर्थ और प्रतीक एवं उसके अर्थ के बीच संबंध को समझ पाते हैं।

के. बॉहेलर (K. Buhler), जिन्होंने मूक-बधिर बच्चों पर अध्ययन किया है, उन्होंने पाया कि इस उम्र के बच्चे यह खोज काफी बाद में, लगभग छह वर्ष की उम्र में कर पाते हैं। परवर्ती अध्ययन बताते हैं कि मूक-बधिर बच्चे, जब बोलना सीखते हैं तो उनमें यह खोज स्टर्न की कल्पना की अपेक्षा कम नाटकीय ढंग से घटित होती है। यहां इस बात का महत्त्व गौण हो जाता है कि बच्चा कुछ खोज करता है बल्कि दरअसल वह कौनसी भाषा सीख रहा है यह ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यहां कुछ ज्यादा जटिल घटित होता है।

फ्रेंच अध्येता एच. वेलन (H Wallon) जिन्होंने बच्चे के विकास के आरंभिक काल का अध्ययन किया है, वे भी इसे असंभव मानते हैं कि बच्चा ऐसी 'खोज' कर सकता है क्योंकि इसके बाद होने वाला बच्चे के शब्दों का विकास पूर्णत: अनुकूलित प्रतिक्रिया किस्म का होता है।

एक साधारण सा उदाहरण है कि डारविन का पोता बतख को 'क्वैक' कह कर संबोधित करता था, फिर उसने सभी पक्षियों को 'क्वैक' बुलाना शुरू कर दिया। बाद में क्योंकि बतख पानी में तैरती है उसने सभी तरल पदार्थों को 'क्वैक' कहना शुरू कर दिया; अब बच्चा दूध ही नहीं दवाओं को भी 'क्वैक' कहने लगा। उसके विकास के क्रम में दूध और मुर्गी दोनों को एक ही नाम से पुकारा जा रहा था, जबकि इसका संबंध इस बात से था कि बतख पानी में तैरती है। कालांतर में बच्चे ने एक ऐसा सिक्का देखा जिस पर चील का चित्र अंकित था और उसने सिक्के को भी 'क्वैक' की श्रेणी में शामिल कर लिया।

इस तरह अक्सर हम देखते हैं कि शब्दों के एक अनुकूलित उद्दीपन से दूसरी नितांत भिन्न किस्म के अनुकूलित उद्दीपन में स्थानांतरित होने के बीच परिवर्तनों की एक लंबी श्रृंखला मौजूद रहती है। अर्थों का विस्तार वास्तव में स्टर्न की स्थापना को नकारता है। यदि बच्चा यह खोज ले कि प्रत्येक वस्तु का अपना अलग नाम होता है और वह इस बात का अनुमान कर सकता है कि दूध का नाम अलग होता है और पानी का नाम उससे भिन्न कुछ होता है तो फिर यह असंभव है कि वह एक सिक्के, धातु के एक टुकड़े और मुर्गी को एक ही नाम से पुकारे, जबकि बच्चे के लिए यह दोनों वस्तुएं नितांत भिन्न भूमिका में होती हैं।

यह तथ्य बताते हैं कि स्टर्न की परिकल्पना एक असंभव कल्पना है। हम नहीं कहते हैं कि सामान्यत: आदर्शवादी परंपरा से बच्चे की वाणी के विकास पर आधारित अपनी इस परिकल्पना में स्टर्न इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि बच्चे की चेतना के विकास में आंतरिक स्रोत ज्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्टर्न की अभिव्यक्ति में वाणी के भौतिक और सामाजिक कारणों के साथ उसके आंतरिक पहलुओं की भी पुष्टि करना चाहते हैं। बच्चा किसी चीज की 'खोज' करता है, इस परिकल्पना का स्रोत भी यही है। लेकिन बच्चे द्वारा ऐसी खोज से जो ध्वनित होता है वह असंभव जान पड़ता है। ड़ेढ़ से दो साल की उम्र के बच्चों पर किए गए भाषा के पहले प्रकटीकरण की स्मृति से जुड़े सभी प्रयोग यही साबित करते हैं कि इतनी कम उम्र में इस तरह की खोज कितनी असंभव है।

अत: स्टर्न की परिकल्पना इस तरह ध्वस्त हो जाती है । एक और परिकल्पना रह जाती है: बच्चा शब्दों के अर्थ नहीं खोजता, किसी खास क्षण में वह उस तरह के सक्रिय अन्वेषण में लगा नहीं होता जैसा कि स्टर्न साबित करना चाहते हैं, लेकिन बच्चा शब्द के अर्थ के बाहरी स्वरूप (स्ट्रक्चर) पर नियंत्रण हासिल कर लेता है, वह इस तथ्य को समझ जाता है कि प्रत्येक वस्तु का अपना एक नाम होता है, वह उस स्वरूप को समझ लेता है जो शब्द और वस्तु को परस्पर इस तरह संबद्ध करता है कि किसी वस्तु का दिया गया नाम या शब्द स्वयं उस वस्तु की मिल्कियत प्रतीत होने लगता है।

यदि हम शब्द के इतिहास को देखें तो हम पाएंगे कि एक वयस्क व्यक्ति में वाणी का विकास इसी तरह होता है। यह पता लगाने के क्रम में कि कैसे प्रतीकों की स्वाभाविक बनावट जो कि बौद्धिक खोज तो हर्गिज नहीं है, को लेकर समझ विकसित होती

है, हमें यह भी देखना चाहिए कि सामान्यत: वाणी कैसे बनती है ?

वाणी और शब्दों के अर्थ स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं, और किसी शब्द का अर्थ कैसे विकसित हुआ इसका इतिहास एक सीमा तक इसे समझने में मनोवैज्ञानिक तौर पर मदद करता है कि प्रतीक कैसे विकसित होते हैं, बच्चे में पहला प्रतीक कैसे स्वाभाविक तौर पर प्रकट होता है, कैसे अनुकूलित प्रतिक्रिया के आधार पर प्रतीकों के मैकेनिज्म पर नियंत्रण हासिल किया जाता है, और कैसे इस मैकेनिज्म के द्वारा एक नई अवधारणा उभरती है जिसका विस्तार अनुकूलित प्रतिक्रिया की सीमाओं का अतिक्रमण करता है।

हम जानते हैं कि हमारे शब्दों का अविष्कार नहीं किया गया था। हालांकि, यदि हम किसी से पूछें, जैसे कि बच्चे पूछते हैं कि किसी वस्तु को उसी एक नाम से क्यों बुलाते हैं, जैसे कि खिड़की को खिड़की, या दरवाजे को दरवाजा ही क्यों कहते हैं, तो हम में से ज्यादातर को इसका कोई जवाब नहीं मिलेगा। यही नहीं हमारा यह मानना भी गलत नहीं होगा कि खिड़की को 'दरवाजा' या दरवाजे को 'खिड़की' की शब्द ध्वनियां भी दी जा सकती थीं। यह सारा मामला ही मनमाना (arbitrary) है। हालांकि, हम जानते हैं कि भाषा का विकास मनमानेपन से गढ़े गए शब्दों के द्वारा या इस इस कारण नहीं हुआ है कि लोग खिड़की को खिड़की बुलाने पर सहमत हो गए होंगे। स्वाभाविक तौर पर भाषा इस तरह विकसित हुई है कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसने अनुकूलित प्रतिक्रिया के विकास की दिशा का पूर्णत: अतिक्रमण किया है, जो कि 'क्वैक' शब्द के बतख से पानी और सिक्के के बीच स्थानांतरण को स्वीकार करती है।

चलिए एक साधारण सा उदाहरण देखते हैं। मनोवैज्ञानिक-भाषाविद कहते हैं कि समकालीन भाषा में शब्दों के दो समूह पहचाने जा सकते हैं, जिनमें से एक को दृश्य रूप में अलग किया जा सकता है। ए.ए. पोतेब्नया (A.A. Potenya) द्वारा रूसी भाषा में प्रयुक्त कुछ शब्दों को देखते हैं, पेतुख Petukh (मुरगा), वोरोन Voron (कौआ) और गोलुब golub (कबूतर)। ऐसा प्रतीत होगा कि हम यह बता सकते हैं कि एक कबूतर को कबूतर या कौए को कौआ क्यों कहा जाता है। लेकिन क्या इसका कोई और तरीका भी हो सकता है ? लेकिन यदि हम कुछ और शब्दों को लें जैसे कि गोलुबोई goluboi (नीला) या वोरोनाई voronoi (काला), प्रिगोलुबिट prigolubit (दुलार), प्रोवोरोनिट proboronit (लंबी जम्हाई), या पेतुशित्सया petushit'sya (दंभी होना), इन शब्दों में देखा जा सकता है कि कैसे मनोवैज्ञानिक रूप से शब्दों में भिन्नता होती है और इनमें से प्रत्येक शब्द में एक विशिष्ट चारित्रिक गुण को पहचाना जा सकता है। हम शायद अभी यह न बता पाएं कि इन पंछियों को वोरोन Voron (कौआ) और गोलुब golub (कबूतर) क्यों कहा जाता है, लेकिन वोरोनाई voronoi (काला) और goluboi (नीला) के साथ यह स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि वोरोनोई का अर्थ काला है और गोलूबोई का अर्थ हल्का नीला। यहां हम वोरोनोई के नीला और गोलुबोई के काला होने की छूट नहीं ले सकते।

प्रोवोरोनिट proboronit (लंबी जम्हाई) और प्रिगोलुबिट prigolubit (दुलार) के इन सामान्य अर्थों के अलावा यह शब्द अपने आप में कुछ खास ध्वनियों को लिए हैं, जिनके खास अर्थ भी हैं। यही कारण है कि वोरोन voron (कौआ) जैसे शब्दों में मनोवैज्ञानिक दो बिंदुओं को रेखांकित करते हैं, एक तरफ शब्द वोरोन की ध्वनि का स्वरूप (v+o+r+o+n) और दूसरी तरफ वह खास अर्थ जो एक खास पंछी का नाम है।

प्रोवोरोनिट proboronit (लंबी जम्हाई) जैसे शब्द में तीन बिंदु हैं : पहला ध्वनियों की जटिलता, दूसरा शब्द का अर्थ (प्रोवोरोनिट proboronit का मतलब है लंबी जम्हाई); तीसरा यह शब्द एक खास छवि से जुड़ा है, इस तरह इस शब्द प्रोवोरोनिट proboronit में एक खास छवि अंतर्निहित है (जो एक कौआ मुंह खोलने पर प्रदर्शित करता है)। एक खास किस्म की आंतरिक तुलना की जाती है, एक आंतरिक छवि से जुड़ी हुई अनुकूलित ध्वनियों की एक आंतरिक तस्वीर। जब हम कहते हैं पेतुशित्सया petushit'sya (दंभी होना) तब एक खास छवि उभरती है, जिसके लिए कोई शब्द उपयुक्त प्रतीत नहीं होता, हम एक व्यक्ति की तुलना एक मुरगे से कर रहे होते हैं; जब हम कहते हैं गोलुबोई नेबो goluboe nebo (नीला आकाश) तब आसमान की रंग की कबूतर के फैले हुए पंख से तुलना स्पष्ट है; इसी तरह वोरोनोई कोन voronoi kon (काला घोड़ा) में शब्द वोरोनोई voronoi कौए के काले पंख का अर्थ देता है। इन सभी उदाहरणों में एक छवि बनती है, जो शब्द के अर्थ से संबद्ध है।

आधुनिक भाषा में हमारे पास शब्दों के दो समूह होते हैं : एक समूह के शब्द एक छवि को निर्मित करते हैं और दूसरे समूह के शब्दों के साथ ऐसा नहीं होता। अंग्रेजी शब्द कैबेज cabbage (पत्तागोभी) की तुलना स्नोड्रॉप snowdrop (गुलचांदनी) के साथ करते हुए पोतेब्नया दर्ज करते हैं कि यह दोनों शब्द दो भिन्न वर्गों से संबद्ध नजर आते हैं, क्योंकि स्नोड्राप snowdrop (गुलचांदनी, बर्फ के नीचे उगने वाला एक फूल जो बर्फ पिघलने के बाद खिलता है) शब्द के साथ एक खास छवि जुड़ी है, जबकि कैबेज cabbagre (पत्ता गोभी) शब्द में एक मनमानापन नजर आता है। लेकिन ऐसा सिर्फ अवधारणात्मक स्तर पर ही है, अनुवांशिकी अध्ययनों ने यह

साबित किया है कि प्रत्येक शब्द की अपनी छवि होती है, लेकिन यह छवि जल्दी ही छुप जाती है, हालांकि प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति मूल को पुन:स्थापित किया जा सकता है। शब्द cabbage का संबंध लातिन भाषा के शब्द कापुत caput से है, जिसका अर्थ है सिर। पत्ता गोभी का बाहरी आकार सिर से मिलता-जुलता है, लेकिन हम इस संबंध के बारे में भूल चुके हैं या उसके बारे में जानते ही नहीं हैं। मनोवैज्ञानिकों के लिए इस संबंध को जोड़ने वाला सूत्र बहुत महत्त्वपूर्ण होता है क्योंकि उसे जाने बिना हम यह नहीं समझ सकते कि क्यों एक खास ध्वनि समूह कै-बे-ज c-a-b-b-a-g-e एक खास पौधे की पहचान के लिए प्रयुक्त किया जाता है। दरअसल, लगभग प्रत्येक शब्द का इतिहास यह बताता है कि अपने मूल में उस शब्द का संबंध एक खास छवि के साथ था। बाद में, मनोवैज्ञानिक विकास के नियमों के चलते उन्हीं शब्दों से नए शब्दों का विकास होता चला गया। इसलिए शब्द का अविष्कार नहीं हुआ है, वे किन्हीं बाहरी परिस्थितियों और किसी मनमाने समझौते का भी परिणाम नहीं हैं, बल्कि वे अन्य शब्दों से होते हुए ही अस्तित्व में आए हैं। कभी-कभी नए शब्द किसी नई वस्तु को पुराना अर्थ प्रदान करने के क्रम में भी निर्मित होते हैं।

कुछ सामान्य शब्दों के इतिहास में झांकने की कोशिश करते हैं। रूसी शब्द व्राच vrach (डॉक्टर) की व्युत्पत्ति से जाना जा सकता है कि स्लाविक भाषा के शब्द व्राति vrati, वोरचात vorchat (झूठ बोलना, बड़बड़ाना) शब्द परस्पर संबद्ध हैं, लेकिन शब्द व्राच vrach का आरंभिक आशय वृशि vrushi (वशीभूत करना) या जागोवारिवायुशि बोलेन Zagovarivayushchi bolenzn (बीमारी को वशीभूत करना) था। यहां हम ध्वनि और उसके अर्थ के बीच सीधा और साफ संबंध देख सकते हैं। कई बार परस्पर जोड़ने वाले यह सूत्र इतने दूर के होते हैं कि आधुनिक व्यक्ति के लिए उन मनोवैज्ञानिक कड़ियों को तलाश पाना और यह समझा पाना कि अमुक शब्द का फलां छवि के साथ क्या संबंध हो सकता है, काफी कठिन प्रतीत होता है।

सुत्की sutki (चौबीस घंटे) शब्द को ही लें। इसका क्या अर्थ है ? यदि हम कहें कि कुछ बोली विज्ञानियों के अनुसार आरंभ में इस शब्द का अर्थ किसी कमरे का आगे वाला कोना होता था, तो विशिष्ट विश्लेषण के बिना यह समझना लगभग असंभव होगा कि इस शब्द का अर्थ ''चौबीस घंटे'' क्यों लिया जाने लगा, जैसा कि अब हम इससे अर्थ लेते हैं। चौबीस घंटे यानी एक दिन और एक रात, अनेक शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन बताता है कि यह शब्द stuknut स्तुकनुत (खटखटाना) शब्द से बनता है। सोत्कनुत sotknut या सोतिकेत sotykat (जोड़ना जैसे दिन रात से जुड़ता है)। रूस के कुछ प्रांतों में सुत्की sutki का आशय सुमेरकी sumerki से भी लिया जाता है, जिसका मतलब है यह समय जब रात और दिन मिलते हैं। इस तरह रात और दिन को मिलाकर सुत्की sutki कहा जाने लगा।

कुछ शब्दों के मूल की तलाश करना बहुत आसान होता है लेकिन यह बताना बहुत मुश्किल होता है कि यह शब्द उत्पन्न कहां से हुआ। उदाहरणार्थ कौन जानता है कि रूसी शब्द ओकुन okun (perch, बैठना) ओको oko (आंख) शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ बड़ी आंख वाली मछली भी है।

अन्य शब्दों का इतिहास और भी उलझा हुआ है। उदाहरण के लिए किसने सोचा होगा कि राजलुका razluka (अलगाव) और लुकाव्यी lukavya (चालाक, धूर्त) जैसे शब्द धनुष की प्रत्यंचा की छवि से संबद्ध हैं ? यदि प्रत्यंचा को धनुष (रूसी में लुक luk) पर चढ़ाये जाने के दौरान वह टूट जाती है तो इसे राजलुका razluka (अलगाव) कहा जाता है। क्योंकि लुक luk (धनुष) सामान्यत: एक घुमावदार वस्तु है, रेखाओं के बीच सीधी (प्रयामाया pryamaya) और घुमावदार (लुकाव्या lukavya) के रूप में फर्क किया गया।

इस तरह लगभग प्रत्येक शब्द का अपना इतिहास है, जिसके मूल में उसका प्रतिनिधित्व करने वाली एक छवि, और अपने शब्द की निर्मिति तक की कड़ी जुड़ी हुई है। इसका मतलब है कि इस निर्मिति को समझने के लिए खास तरह का विश्लेषण अनिवार्य है।

रूसी भाषा में लगभग हमेशा विपरीत दिशा में लौटने की प्रक्रिया मौजूद रहती है। पोतेब्नया ने इस प्रक्रिया का खुलासा किया है।

इसलिए, कुछ साहित्यिक शब्द बोलचाल की भाषा में आकर बदल जाते हैं : पालिसाद्निक palisadnik (आगे का बगीचा) की बजाय लोग पोलुसाद्निक polusadnik (आधा बगीचा) कहते हैं। इस बदलाव के साथ शब्द एक खास छवि ग्रहण कर लेता है। त्रोतुआर trotuar (गलियारा) की बजाय लोग प्लितुआर plituar (खन) बोलना पसंद करते हैं। यह बदलाव शब्द को एक खास छवि देना संभव बनाता है, जो शब्द की ध्वनि को उसमें निहित अर्थ से जोड़ती है। ए. ए. शख्मातोव ज्यादा सामयिक बदलावों का हवाला देते हैं : जैसे डेमिसिजोन demisezonnoe (अर्द्ध मौसमी) की बजाय सेमिसिजोन semisezonnoe (सातों मौसम का) कोट। डेमिसिजोन demisezonnoe (अर्द्ध मौसमी) सेमिसिजोन semisezonnoe में परिवर्तित सिर्फ इसलिए नहीं किया गया कि वह उच्चारण में ज्यादा आसान है बल्कि इसलिए किया गया क्योंकि इस

तरह यह शब्द का सभी मौसमों में पहने जाने वाले कोट के रूप में ज्यादा स्पष्ट होता है।

यही स्पष्टीकरण क्रांति के पहले शब्दों में से एक रिजिम्ह rizhim (regime शासन) की बजाय लोगों द्वारा प्रिजिम्ह prizhim (pressure दबाव) शब्द के प्रयोग के बारे में भी दिया जा सकता है। वे उसे द ओल्ड प्रिजिम्ह the old prizhim बुलाते हैं, क्योंकि वह एक खास छवि से संबद्ध है। इसी तरह वी. आई. डल के प्रकाशित कामों में शब्द स्पिनजाक spinzhak (bach jakcket पीठ जैकेट) आता है, क्योंकि यह वस्त्र पीठ पर ही पहना जाता है। इस तरह यह शब्द सार्थकता प्राप्त करता है।

अफसोस बच्चों की वाणी में इस तरह के बदलाव के हम बहुत थोड़े ही उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। बच्चों के जाने माने शब्द कम्प्रेस kompress के लिए चिर-परिचित शब्द मॉकरेस mokress (अर्थहीन, शब्द के मूल मॉक mok का अर्थ है गीला) शब्द का प्रयोग करते हैं। वेसलीन vasline को मेजलीन mazlin (अर्थहीन शब्द,जिसके मूल शब्द मेज का अर्थ है मलना)। यह परिवर्तन समझे जा सकते हैं : कम्प्रेस शब्द गीलेपन से जुड़ा है और जिस पर वेसलीन मला जाता है। इस तरह के परिवर्तनों के साथ शब्दों के ध्वनि संयोजन और उनके अर्थ के बीच संगति बनाई जा सकती है।

ए. ए. पोतब्नया, एक सामान्य तर्कसंगत वाक्य का विश्लेषण करते हुए यह स्थापित करते हैं कि इसमें प्रयुक्त शब्दों का वास्तविक अर्थ क्या है। इसमें यह निहित है कि हर वाक्य का एक कम महत्त्वपूर्ण अर्थ भी होता है। उदाहरण के लिए कुछ खास शब्दों का रूपकात्मक इस्तेमाल करते हुए हम कुछ खास छवियों पर निर्भर होते हैं इसलिए, यदि हम कहते हैं कि 'तथ्यों की जमीन पर खड़े होकर हम यह कह सकते हैं' तो वास्तव में इसका अर्थ होगा 'विश्वासपूर्वक अपना पक्ष रखना' या 'आत्मविश्वास व्यक्त करना' क्योंकि इसके आत्मविश्वास के मूल में हमारे पास निश्चित तथ्यों के रूप में कुछ सकारात्मक उपलब्ध है। प्रत्यक्षत: यह वाक्य कुछ शब्दों का निरर्थक संयोजन है, लेकिन हमारी 'प्रत्यक्ष वाणी की दृष्टि' से इसका रूपकात्मक आशय है। निश्चय ही जब हम यह कह रहे होते हैं कि तथ्यों की जमीन पर खड़े होकर तब हम यह देखने के लिए कम ही तैयार होते हैं कि हम धरती पर या मिट्टी पर खड़े हैं। हमने अभिव्यक्ति का रूपकात्मक प्रयोग किया। लेकिन जब कोई व्यक्ति यह कहता है कि वह तथ्यों की जमीन पर खड़ा है तब हम अनचाहे ही तथ्यों की जमीन पर खड़े व्यक्ति की तुलना जमीन पर, धरती पर दृढ़ता पूर्वक खड़े व्यक्ति से करने लगते हैं, जो कम से कम हवा में तो नहीं लटका है।

इस लिहाज से हमारे सभी वाक्य और समूची वाणी के रूपकात्मक अर्थ हैं । अब यदि हम बच्चों की वाणी के विकास की ओर लौट कर देखें तो हम पाएंगे कि क्लिनिकल प्रयोगों में हमें यहां भी वही चीज देखने को मिलेगी, जो हमें शब्दों के विकास के सिलिसिले में देखने को मिली थी। स्पष्टत: जैसे हमारी वाणी में शब्द मनमाने तरीके से नहीं उभरते हैं, बल्कि वे हमेशा कुछ छवियों या कुछ कार्यकलापों से जुड़े स्वाभाविक प्रतीकों के रूप में उभरते हैं, और बच्चों की वाणी में प्रतीक स्वयं बच्चों की खोज से उत्पन्न नहीं होते हैं बल्कि वे प्रतीकों को उन लोगों से ग्रहण करते हैं जो उसके आस-पास मौजूद रहते हैं और कालांतर में वह इन प्रतीकों के उपयोग को समझता है या उनकी खोज करता है।

निश्चित ही मनुष्य ने जब किसी उपकरण की खोज की तब उसके साथ भी यही हुआ होगा। किसी भी उपकरण को उपकरण बनाने के लिए उसमें निहित कुछ भौतिक गुण होने आवश्यक थे ताकि किसी खास परिस्थति में उसका उपयोग किया जा सके। उपकरण के रूप में लकड़ी को ही देखें। लकड़ी में कुछ भौतिक गुण होने अनिवार्य थे, तभी खास परिस्थिति में उसका खास तरह से उपयोग संभव हो सकता था।

इसी तरह, मनोवैज्ञानिक प्रतीक बनने के उद्दीपन के लिए कुछ खास मनोवैज्ञानिक गुण अपेक्षित हैं। सबसे साधारण रूप में हम कह सकते हैं कि जब बच्चा किसी एक ढांचे को और उससे जुड़े सभी अवयवों को पहचान रहा होता है तब बच्चों के लिए उद्दीपन एक स्वभाविक प्रतीक या संकेत बन जाते हैं।

हम पूछ सकते हैं कि हमने जिस रूपकात्मक वाणी की बात की वह बच्चे में कहां होती है ? बच्चे की वाणी के विकास में वह संबंध कहां होता है जो प्रतीक और उसके अर्थ के बीच संपर्क का काम करता है, जिसे अनुकूलित प्रतिक्रिया के रूप में अर्थ के विस्तार की प्रक्रिया या प्रतिक्रिया के एक क्रम से दूसरे क्रम में हस्तांतरण के दौरान देखा जा सकता है। निश्चय ही यह संबंध बच्चों में नहीं मिलता। जब बच्चा शब्द सीखता है, वह उन्हें बाह्य रास्तों से सीखता है। हमें सिर्फ यह बताना होगा कि क्यों हम कुछ अर्थों को भूल गए और क्यों हमें यह याद करने की जरूरत है कि सुत्की sutki (चौबीस घंटे) शब्द सुमेरकी sumerki (सूर्यास्त), या उससे भी पहले स्तिक द्वुख स्तेन styk Dvukh sten (दो दीवारों का आपस में मिलना) का प्रतिनिधित्व करता था। अन्य शब्दों के साथ भी बिल्कुल यही स्थिति है, और उनका भी उद्गम अब अबोधगम्य प्रतीत होता है। अनुकूलित प्रतिक्रिया के नियमों

के आधार पर मध्यस्थता करने वाले संपर्क निरस्त कर दिए गए हैं। एक बार पुन: याद करें कि हमने चयन प्रतिक्रिया की बात की थी। यह बच्चे में इस तरह घटित होती है कि धीरे-धीरे मध्यस्थता करने वाले संपर्क विलुप्त होते चले जाते हैं और एक संधि रेखा का विलय घटित होता है। हमारी भाषा असंख्य संधियों में विलय का प्रतिनिधित्व करती है जहां मध्यस्थता करने वाले संपर्क विलुप्त होते चले जाते हैं और यहां तक कि आधुनिक शब्द के अर्थ के लिए वे अवांछित भी हो जाते हैं।

अब हम शब्द चर्निला को chernila (स्याही) को समझते हैं। हम जानते हैं कि यह शब्द क्या अर्थ देता है क्योंकि इसका उद्‌गम शब्द चर्नी chernyi (काला) से हुआ है इसके अर्थ को लोग अभी भूले नहीं हैं, क्योंकि रूसी भाषा में यह शब्द अभी नया है। लेकिन क्या इसका यह मतलब है कि स्याही हमेशा काली ही होती है ? स्याही लाल या हरी भी हो सकती है। स्पष्ट है कि रंग और छवि के आधार पर दिया गया नाम वस्तु के कुछ घटकों के साथ असंगत होता है। इस उदाहरण में कुछ पुराने घटकों को नकार दिया गया है और शब्द के पुराने संकीर्ण अर्थ और नए भिन्न अर्थ के बीच टकराव पैदा होता है, संकीर्ण या गैर महत्त्वपूर्ण या आंशिक अर्थ और ज्यादा जरूरी और व्यापक अर्थ के बीच टकराव। आरंभिक शब्द चर्निला chernila का उद्‌गम कहां से हुआ ? निस्संदेह, जो पहली तस्वीर आंखों के आगे आती है, पहली जो विशेषता प्रकट होती है वह यह कि यह कोई काली वस्तु है। चर्नी chernyi (काला) से चर्निला chernila (स्याही) तक अर्थ के हस्तांतरण की यह घटना अनुकूलित प्रतिक्रिया की तरह है। लेकिन स्याही के साथ एक अनिवार्य बात यह भी जुड़ी है कि वह तरल होती है। लेकिन क्या यह भी अनिवार्य है कि तरल काला ही हो ? निश्चय ही नहीं। इसका मतलब यह हुआ कि ''काला'' होने की विशेषता गैर जरूरी है। अंतत: चर्निला chernila (स्याही) शब्द एक खास तरह की प्रतिक्रिया से संबद्ध है : यह कोई ऐसी वस्तु है जिससे लिखा जा सकता है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि स्याही के लिए काला होना उतना जरूरी नहीं, जितना यह जरूरी है कि उससे लिखा जा सके। भाषा के विकास का समूचा इतिहास यही बताता है कि यह इसी तरह घटित होता है।

सभी यूरोपीय भाषाओं में रूसी शब्द कोरोवो korova (गाय) व्युत्पत्ति के आधार रोगाताया rogataya (सींगों वाला) को बताता है। लातिन भाषा में इस शब्द का अर्थ है बकरी और फ्रेंच में हिरण।

बच्चा जो सभी मूर्त शब्दों को हमसे ग्रहण करता है, उसके लिए किसी भी शब्द और उससे जुड़ी वस्तु के बीच एक संबंध स्थापित हो जाता है। यह संबंध या अनुकूलित प्रतिक्रिया, बच्चे में अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रकट होती है क्योंकि बच्चा किसी नए प्रतीक की खोज नहीं करता है, क्योंकि वह प्रतीकों को किसी वस्तु के चिह्न के रूप में इस्तेमाल करता है। लेकिन यदि हम क्लिनिकल आधार पर या प्रयोग के द्वारा यह देखने की कोशिश करेंगे कि कोई बच्चा किसी चिह्न को कैसे स्वतंत्र रूप से ग्रहण करता है, हम देखेंगे कि प्रयोगों में प्रकट होने वाले संकेत उन सभी स्तरों से होकर गुजरेंगे जिनसे कि भाषा अपने विकास क्रम में होकर गुजरी है।

प्रयोगों में, हम बच्चे को इस स्थिति में रखते हैं : खेल में, बच्चा काफी उत्साह के साथ किसी भी वस्तु को कोई भी नाम दे देता है। उदाहरण के लिए, खेल रहा बच्चा प्लेट या घड़ी किसी भी नाम से कोई भी काम करा सकता है। हम यह भी मान सकते हैं कि उनके लिए चाकू डॉक्टर है, स्याही की बोतल का ढक्कन गाड़ी है, घड़ी दवा की दुकान है और कोई भी अन्य वस्तु दवा इत्यादि हो सकती है। इसके बाद हम देखते हैं कि बच्चा बहुत मजे में इन चीजों के साथ कई तरह की क्रियाएं करता है और वह अपने इन क्रियाकलापों का मतलब भी भली-भांति जानता है। बच्चा बहुत आराम से इसके लिए उपयुक्त कहानी भी सुना सकता है, जैसे कि कैसे डॉक्टर अपनी गाड़ी में बैठ कर मरीज को देखने पहुंचा, उसकी जांच की और फिर कोई अन्य व्यक्ति दवा लेने के लिए दुकान पर गया। कई बार तो बच्चे इससे भी कहीं जटिल कहानी सुना सकते हैं। यह देखना भी दिलचस्प है कि बच्चे को यह याद रहता है कि घड़ी दवा की दुकान है, महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बच्चा अपने खेल में कोई गलती नहीं करता।

अनेक प्रयोगों के बाद, पांच साल का बच्चा धीरे-धीरे कुछ प्राथमिक विशेषताओं को पहचानना शुरू कर देता है जो चीजों में संबंध बनाने वाले सूत्र हैं। बच्चे के सामने घड़ी रख कर उसे बता दें कि यह दवा की दुकान है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम घड़ी का क्या उपयोग करते रहे हैं, वह उन क्रियाकलापों को भी दवा की भाषा में पढ़ने लगेगा। वह अंकों को दवा के रूप में पढ़ेगा। उसके लिए 'औषधालय' वह पहली प्रेरणा होगा जिसे कि वह पहचानता है और जो प्रतीक और उसके अर्थ के बीच संपर्क बताने वाले के रूप में काम करता है।

दूसरे शब्दों में बच्चा स्वयं भी उसी तरह के प्रतीकों की रचना करता है जिस तरह हमारी वाणी के विकास के क्रम में प्रतीक रचे जाते रहे हैं। एक प्रयोग में जब एक बच्चा दो चीजों को आपस में जोड़ता है, फिर चाहे वह घड़ी को दवा की दुकान जोड़ना ही क्यों न हो तब बच्चा किसी एक विशेषता को अलग कर लेता है, जैसे

कि घड़ी का चेहरा, और उसी एक विशेषता के आधार पर वह दवा की दुकान को घड़ी से संबद्ध कर देता है। इसी तरह जब एक किताब जिसका मतलब है 'जंगल' को छोटे बच्चे के सामने रखा जाता है, तब बच्चा मान लेता है कि वह जंगल है क्योंकि उसका आवरण काला है। पांच साल के बच्चे के लिए किताब जंगल नहीं रह जाती, बच्चा पहले ही अनेक उद्दीपनों में से एक को अलग कर चुका है, जैसे कि काला रंग और यही विशेषता प्रतीक और उसके अर्थ के बीच संपर्क सूत्र की भूमिका निभाने लगती है।

हम अब तक कहे गए को संक्षेप में समझने की कोशिश करेंगे। बच्चे की वाणी का प्रागैतिहास यह दर्शाता है कि बच्चे की वाणी बिल्कुल उसी तरह विकसित होती है, जैसे कोई अनुकूलित प्रतिक्रिया, यानी कि यह विकास अनुकूलित प्रतिक्रिया के प्रयोगशाला अध्ययनों से पता चले सभी चरणों से होकर गुजरता है। खासतौर से, यह अनिवार्य है कि वाणी का विकास चिंतन से पूर्णत: स्वतंत्र रहते हुए और चिंतन का विकास बच्चे की वाणी से पूर्णत: स्वतंत्र रहते हुए होता है, लेकिन कुछ 'खास' क्षण ऐसे भी होते हैं, जब दोनों का संयोग होता है। लगभग दो वर्ष की उम्र के आसपास बच्चा अपने 'शब्द भंडार' में आकस्मिक वृद्धि का अनुभव करता है, सक्रिय विस्तार करता है, और इसके बाद ही आता है सवालों का दौर : यह क्या है ? आप इसे क्या पुकारते हैं ?

हम जितना जानते हैं उसके आधार पर हमें स्टर्न की उस परिकल्पना को नकार देना चाहिए कि वाणी और चिंतन के परस्पर अतिक्रमण के क्षण में बच्चा शब्द का अर्थ खोज लेता है। आनुवांशिक विश्लेषण बताते हैं कि खोज की बात अभी करना कठिन है। स्पष्ट है कि पहले पहल बच्चा प्रतीक और उसके अर्थ के बीच आंतरिक संबंध पर नहीं बल्कि शब्द और वस्तु के बीच के बाह्य संबंध पर नियंत्रण स्थापित करता है, और यह दो उद्दीपनों के बीच सामान्य संपर्क के कारण अनुकूलित प्रतिक्रिया के विकास के नियमों के तहत घटित होता है। खासतौर से इसी कारण से यह मानना मुश्किल प्रतीत होता है कि वस्तु की पहचान या खोज पहले और उसके कार्य की पहचान बाद में होती है। दरअसल, प्रत्यक्षत: कार्य को ग्रहण किया जाता है और उसे ग्रहण किए जाने के आधार पर ही बाद में वस्तु को स्वीकार किया जाता है। इस तरह खोज का वह क्षण जिसकी बात स्टर्न करते हैं वह बहुत पीछे धकेला जा चुका है। ◆

अनुवाद - देवयानी

पारिभाषिक शब्द

वाणी : इस लेख में 'स्पीच' (Speech) का अनुवाद वाणी किया गया है। वाणी शब्द मौखिक (ध्वन्यात्मक) भाषा के लिए प्रयुक्त होता है। वायगोत्स्की बच्चे की वाणी के विकास को सहज मौखिक ध्वनियों से आरंभ होते हुए देखते हैं। साथ ही आरंभ में वाणी और विचार के विकास को पृथक-पृथक मानते हैं। वायगोत्स्की के अनुसार कालान्तर में वाणी एवं विचार परस्पर संबद्ध हो जाते हैं।

स्वभाविक प्रतिक्रिया : यह 'अनकंडीशंड रिफ्लेक्स' (Unconditioned reflex) का अनुवाद है। किसी भी जीवधारी में शारीरिक या मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया जो किसी उद्दीपन (Stimulus) से स्वभाविक तौर पर उत्पन्न होती है। ये प्रतिक्रिया बिना अनुकूलन के तुरंत, अस्वैच्छिक एवं तयशुदा रूप में होती है जैसे - खाना देखकर मुंह में पानी आना, गरम चीज के हाथ लगते ही हाथ का झटके से हटना, तेज विस्फोट से सिहर जाना आदि।

अनुकूलित प्रतिक्रिया : यह 'कंडीशंड रिफ्लेक्स' (Conditioned reflex) का अनुवाद है। किसी भी जीवधारी में किसी खास उद्दीपन के दोहराव से उत्पन्न होने वाली शारीरिक या मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया। इसमें अनुकूलित उद्दीपन से स्वभाविक प्रतिक्रिया संबद्ध हो जाती है जैसे - कुत्ते को रोटी दिखाते ही घंटी बजाना। जो लार रोटी देखते ही आती थी वह अब घंटी से भी आने लगती है।